प्रक्रिया :

1. प्रतियोगिता हेतु प्रवेश शुल्क रुपये 100/- रखा गया है।
2. प्रतियोगिता में भाग लेने का इच्छुक प्रतिभागी प्रेरक अथवा संस्था प्रधान को प्रवेश शुल्क रुपये 100/- नगद जमा करवा कर प्रतियोगिता प्रश्नोत्तरी एवं आधार पुस्तकें **'आओ हम जीना सीखें', 'जीवन विज्ञान : एक परिचय', 'आचार्य महाश्रमण जीवन परिचय'** प्राप्त कर सकते हैं। संस्था प्रधान अथवा प्रेरक को प्रवेश शुल्क की 10 प्रतिशत राशि प्रोत्साहन के रूप में दी जायेगी।
3. प्रश्नोत्तरी एवं आधार पुस्तकें सीधे जीवन विज्ञान अकादमी, केन्द्रीय कार्यालय, जैन विश्व भारती, लाडनूँ-341306 जिला नागौर (राजस्थान) से भी रुपये 100/- नगद जमा करवा कर अथवा रुपये 125/-(डाक खर्च सहित) का जैन विश्व भारती, लाडनूँ के नाम देय बैंक ड्राफ्ट भेजकर भी प्राप्त की जा सकती है।
4. प्रश्नोत्तरी पूर्ण कर वापस जमा करवाने की अन्तिम तारीख 30 सितम्बर, 2011 है।

प्रश्नोत्तरी भेजने का पता

जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता -2011

जीवन विज्ञान अकादमी

जैन विश्व भारती, लाडनूँ - 341306

(नागौर-राजस्थान)।

5. जाँची हुई प्रश्नोत्तरी लौटाई नहीं जायेगी।
6. सभी प्रतिवाद का हल विशेषाधिकार समिति करेगी। विशेषाधिकार समिति का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।
7. परिणाम की सूचना वेबसाइट पर यथासमय उपलब्ध करवा दी जायेगी।
8. एक से अधिक विजेता होने पर परिणाम लॉटरी द्वारा निकाला जायेगा।
9. पुरस्कार समारोह : प्रश्नोत्तरी की जांच होने पर वरीयतानुसार प्रथम दस प्रतिभागियों को आमंत्रित कर गुरुदेव के सान्निध्य में सम्मानित किया जावेगा -

प्रथम पुरस्कार - 5000/- रुपये मूल्य का
द्वितीय पुरस्कार - 4000/- रुपये मूल्य का
तृतीय पुरस्कार - 3000/- रुपये मूल्य का
सांत्वना पुरस्कार - 1000/- रुपये मूल्य का
(वरीयता से अन्य सात को)

प्रथम 100 स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी दिये जायेंगे।

उत्तर पुस्तिका जमा कराने की
अन्तिम तारीख
30 सितम्बर, 2011

जीवन विज्ञान
स्वस्थ समाज की संरचना

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करे

जीवन विज्ञान अकादमी

जैन विश्व भारती, लाडनूँ - 341306 (राजस्थान)
फोन नं. 01581-222974,200170, 09950039313
फैक्स - 223280
ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com
वेबसाइट : www.jeevanvigyan.org

मुद्रक : नवीन ग्राफिक्स, जयपुर 9414043207

50 आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

जीवन विज्ञान
स्वस्थ समाज की संरचना

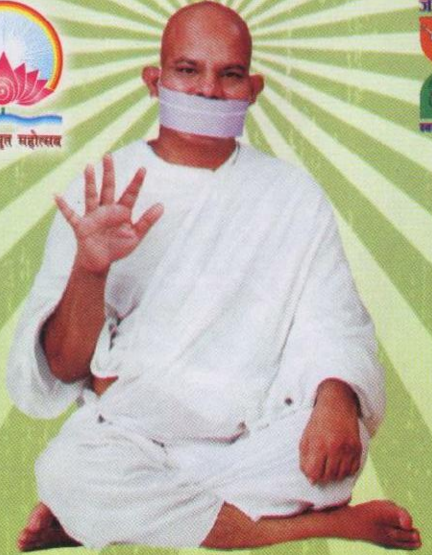

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर

जीवन विज्ञान

संस्कार निर्माण प्रतियोगिता -2011

आयोजक

जीवन विज्ञान अकादमी

केन्द्रीय कार्यालय, जैन विश्व भारती, लाडनूँ - 341306 (राजस्थान)
फोन नं. 01581-222974, 09950039313
फैक्स - 223280, ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com
वेबसाइट : www.jeevanvigyan.org

प्रायोजक

माणकराज शान्ताबाई सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, वंद

प्रचार प्रसार सहयोग

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, लाडनूँ

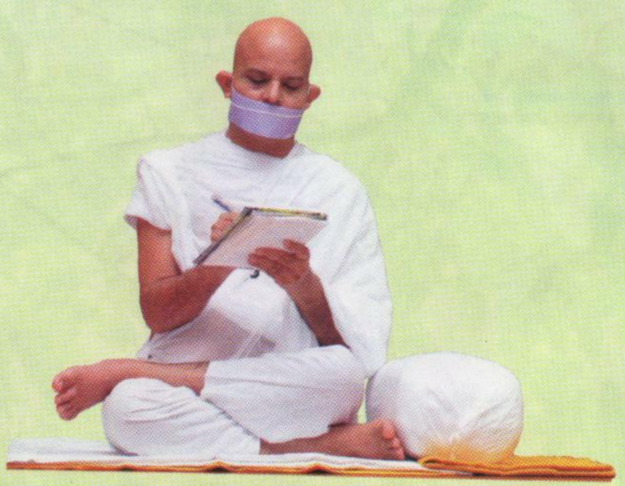

आशीर्वचन

जो जीवन धर्म और कौशल से अनुप्रणित होता है वह कलात्मक होता है। मनुष्य अनेक विषयों का ज्ञान करता है। वह अनेक कलाओं को सीखने का प्रयास करता है, किन्तु जीवन जीने की कला धर्म की कला को नहीं सीखता है तो मानना चाहिए कि उसने कुछ भी नहीं सीखा।

जीवन की कला को सीखने का अर्थ है – सम्यक् ज्ञान और सम्यक् आचरण से सम्पन्न बनना। इस कला को सीखने के लिये आवश्यक है कि मनुष्य आत्म-निरीक्षण, आत्म-परीक्षण और आत्म-समीक्षण करना सीखे। जीवन विज्ञान के प्रयोग इसमें सहायक बन सकते हैं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान जीवन विज्ञान उसमें सहायक बने। शुभाशंसा।

– आचार्य महाश्रमण

जीवन विज्ञान

संस्कार निर्माण प्रतियोगिता -2011

जीवन विज्ञान जीने का व्यवस्थित ज्ञान है। जीने के नियमों की खोज जीवन विज्ञान है। जीवन के नियम सहज और सरल होते हैं। प्राचीन समय में मनुष्य प्राकृतिक जीवन जीता था। उसका पर्यावरण विशुद्ध था। प्रकृति आधारित रहन-सहन व खान-पान था। प्राकृतिक जीवनशैली में परिवर्तन से मनुष्य बीमार रहने लगा और पशु-पक्षी भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इसके कारण मनुष्य का जीवन अव्यवस्थित सा बन गया। आधुनिक जीवनशैली ने मनुष्य की परेशानियों में अभिवृद्धि ही की है।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवन के 50 वें वर्ष के उपलक्ष में 'अमृत महोत्सव' की संरचना की गई है। इस पावन अवसर पर हम सभी आचार्यश्री के निर्मल जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर सकें, एक साधक ने किस तरह अपने जीवन को पवित्रता से जीया है, यह जान कर अपने जीवन को सही दिशा प्रदान कर सकें, इस उद्देश्य को ध्यान में रख कर इस संस्कार निर्माण प्रतियोगिता – 2011 की परिकल्पना जीवन विज्ञान अकादमी द्वारा की गई है।

जीवन विज्ञान जीवन को व्यवस्थित बनाने की प्रक्रिया है। बचपन से ही सही मुद्रा, सही श्वास, सही नींद, सही सोच आदि का प्रशिक्षण दिया जाए तो व्यक्ति स्वस्थ और शान्त रह सकता है। जैसी मुद्रा होगी वैसे स्राव, भाव, स्वभाव और प्रभाव होंगे। श्वास केवल श्वास नहीं है, अपितु हमारे जीवन को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण तत्त्व है। सही नींद से हमारा मस्तिष्क शान्त और व्यवस्थित हो जाता है। सोचने की पद्धति का प्रशिक्षण प्रारंभ में ही मिल जाए तो सहज रूप से व्यक्ति का व्यक्तित्व श्रेष्ठ बन जाता है।

जीवन विज्ञान विद्यार्थी, अध्यापक और अभिभावक तीनों के लिए उपयोगी है। इसमें आयु, लिंग की कोई सीमा नहीं है। इसलिए सभी वर्ग के लोग इसमें शामिल होकर लाभान्वित हो सकते हैं।

जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता का उद्देश्य जीवन विज्ञान के माध्यम से जीने की कला को सिखाना है। प्रश्नोत्तरी में दिये गये प्रश्नों के उत्तर प्रतियोगी को 'जीवन विज्ञान : एक परिचय', 'आओ हम जीना सीखें' और 'आचार्य महाश्रमण जीवन परिचय' नामक आधार पुस्तकों में से खोजकर देना है। इससे सहज रूप से प्रतियोगी को उत्तर खोजने का पुरुषार्थ करने पर उससे सम्बन्धित विषय का ज्ञान होगा। ज्ञान की आराधना से ही संस्कारों का निर्माण होता है। संस्कार-निर्माण से जीवन श्रेष्ठ बनता है। प्रतियोगी इसमें शामिल होकर स्वयं के हित के साथ ही अर्जित ज्ञान का परिवार व समाज में उपयोग कर सबको लाभान्वित करेंगे, ऐसी मगंल आशा की जा सकती है।

–मुनि किशनलाल

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर यह जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता – 2011 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, प्रेक्षा प्रशिक्षिका स्व. शान्ताबाई सिंघवी' की पुण्य स्मृति में माणकराज शान्ताबाई सिंघवी चरिटेबल ट्रस्ट, वंदवासी-चैन्नई के सौजन्य से जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ द्वारा आयोजित की जा रही है।

सान्निध्य :

जीवन विज्ञान अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी

निर्देशन :

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि श्री किशनलाल जी

पात्रता :

प्रतियोगिता में सभी भाग ले सकते हैं। आयु व लिंग का बंधन नहीं हैं।

आधार साहित्य :

आओ हम जीना सीखें – आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण जीवन परिचय –साध्वी सुमति प्रभा

जीवन विज्ञान : एक परिचय – मुनि किशनलाल

प्रकाशक : जैन विश्व भारती, लाडनूँ (राजस्थान)